सुअर पालन

GRAM SATHI

VOLUNTARY ORGANISATION

DEOGHAR,JHARKHAND

सुअर पालन

सुअर पालन व्यवसाय सर्वप्रथम चीन में पालतु मवेशी के रूप में पाला गया। सुअर की देखभाल इनके खाने की व्यवस्था, रखने का स्थान, रोगों से बचाव आदि बातों पर ध्यान देने से ये मवेशी आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त लाभदायक हो सकते है।

सुअर पालन व्यवसाय :

सुअर पालन व्यवसाय में लगे लोगों का यह उतरदायित्व हो जाता है कि कुछ ऐसे पौष्टिक खाद्य पदार्थ जैसें मांस, दूध, मछली इत्यादि का उत्पादन कराया जाए। मांस उत्पादन में थोड़े समय में अधिक बढ़ने के कारण सूअरों का स्थान सर्वप्रथम आता है। इस दृष्टि से सुअर पालन का व्यवसाय लाभदायक है। एक किलो वजन बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम भोजन की आवश्यकता होती है। मादा सुअर 114 दिनों में बच्चा देती है और वर्ष में दो बार बच्चा देती है। देखभाल अच्छे ढ़ंग से करने पर 10–12 बच्चा देती है। दो माह के बाद में मां के दूध पीना बन्द कर देती है और इन्हें अच्छा भोजन मिलने पर छः महींने पर 50–60 किलोग्राम तक वजन हो जाते है। अन्य जानवरों की अपेक्षा सुअर घटिया किस्म के खाद्य पदार्थ जैसे– सड़े फल, होटल का चुर–चार, अनुपयोगी खाद्य पदार्थ खाती है। सुअर का बाल ब्रश बनाने इत्यादि के काम में आते है।

सुअर की नश्लें :

सुअर पालन व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए अच्छे नश्ल के सुअर का चयन करना आवश्यक है। भारत वर्ष में जो देशी सुअर पाये जाते हैं वे विदेशी सुअर से अपेक्षाकृत आर्थिक दृष्टि से कम उपयोगी हैं। देशी नश्ल के सुअरों को विकास हेतु दूसरे देश से उन्नत नश्ल के सुअर मंगाये गये हैं जिससे देशी नश्ल के सुअरों का नश्ल सुधार किया जा रहा है। भारत में निम्नलिखित विदेशी नश्ल काफी प्रचलित हैं।

यह एक उजले रंग का नश्ल है जो इंगलैंड में पाई जाती है इसका शरीर चिकना तथा लम्बा होता है। यह अत्यंत तेजी से बढ़ने वाला सुअर का नश्ल है। इसकी मादायें काफी बच्चे देती हैं इन्हें दूध भी प्रयाप्त मात्रा में होता है, इसका मांस अच्छा माना जाता है।

लैन्डरेस :

यह अमेरिकी नश्ल का सुअर है यह उजले रंग का तेजी से बढ़ने वाला उन्नत कोटि का नश्ल है, इसका शरीर चिकना तथा लम्बा होता है, इनके कान लम्बे तथा आगे की ओर आँख के उपर कुछ झुके रहते हैं। इनके मांस में चर्बी अपेक्षाकृत कम पाये जाते हैं। यह नश्ल मांस उत्पादन के लिए अच्छा माना जाता है।

हेम्पशायर :

यह अमेरिकी नस्ल का सुअर है। इसका शरीर मध्यम आकार का होता है। इसके शरीर का रंग काला होता है, पर एक उजले रंग की धारी इसके अगले पैर पीठ पर घेरती हुई पायी जाती है। इसका शरीर लम्बा तथा हैम अच्छी तरह विकसित रहता है। इसका मांस अपेक्षाकृत अच्छे किस्म का होता है।

टेमवर्थ :

इंगलैंड में पाये जाने वाला सुअर का नश्ल है इसके शरीर का रंग लाल होता है, शरीर लम्बा तथा चौड़ाई कम रहती है, कान सीधे रहते हैं इसका मांस चर्बीदार होता है।

संकर सुअर का उत्पादन :

देशी सुअर एवं विदेशी सुअर के प्रजन्न से उत्पन्न सूअर को संकर सुअर कहते है। राँची पशु चिकित्सा महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा टेमवर्थ और देशी सुअर से प्रजनित कर एक अच्छा नश्ल विकसित किया गया है जिसे टी० एण्ड डी० के नाम से जाना जाता है। इसके शरीर का रंगा काला होता है। मांस उत्पादन की दृष्टि से यह सर्वाधिक फायदेमंद

नश्ल है, इस नश्ल में रोग निरोधक क्षमता अत्यधिक पाई जाती है। यह नश्ल झारखण्ड प्रदेश के लिए सबसे उपयुक्त नश्ल मानी जाती है। चूँकि इसके शरीर का रंग काला होता है इसलिए इसके मांस को अत्यधिक पसंद किया जाता है। इस नश्ल में बिमारी बहुत कम होती है।

सुअरों के लिए आवास की व्यवस्था :

सुअरों के लिए आवास की व्यवस्था करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि घर साफ सुथरी एवं हवादार हो। अगर पक्का मकान रहे तो अच्छा रहता है।

1. प्रसूति सुअरों का घर–प्रत्येक सुअरी जो बच्चा दे चुकी हो उन्हें एक अलग कमरा में रहना चाहिए। घर साधारणः 8 से 10 फीट का होना चाहिए। कमरा के आगे एक खुला स्थान भी रहना चाहिए, बच्चे साधारणः 6 से 8 सप्ताह तक मां के साथ रहते हैं इसके पश्चात वह थोड़ा खाना आरंभ कर देते हैं। अतः एक माह के बाद उनके लिए बनाया गया विशेष आहार जिसे क्रीप फीड कहते हैं देना चाहिए। प्रसुति सुअरी के लिए दिवाल के चारो ओर दिवाल से 9 इंच मोटी बल्ली की रोक बनी होनी चाहिए। जिसे गार्ड रेल कहते है। छोटे–छोटे सुअर अपने मां के शरीर से दबकर अकसर मरते हैं, जिसके बचाव के लिए यह गार्ड रेल आवश्यक है।

गाभिन सुअरी गृह :

इन घरों में वैसे सुअरियों को रखनी चाहिए जो पाल खा चुकी हो और गाभिन हो। प्रत्येक कमरे में 3 से 4 सुअरियो को रखा जा सकता है, प्रत्येक गाभिन को सोने या बैठने के लिए कम से कम 10 से 12 वर्ग फीट स्थान देना चाहिए, कमरे में खाने–पीने के लिए नाद एवं घुमने के लिए खुला स्थान होना चाहिए।

सूअरों के लिए चारे दाने की व्यवस्था :

नर सूअर जो प्रजन्न के काम आता है उन्हें सुअरियों से अलग कमरा में रखना चाहिए। नर सुअरों के लिए 8 फीट गुणा 10 फीट स्थान रहने के लिए देना चाहिए। कमरे में खाने एवं पीने के लिए नाद।

यह एक उजले रंग का नश्ल है जो इंगलैंड में पाई जाती है इसका शरीर चिकना तथा लम्बा होता है। यह अत्यंत तेजी से बढ़ने वाला सुअर का नश्ल है। इसकी मादायें काफी बच्चे देती हैं इन्हें दूध भी प्रयाप्त मात्रा में होता है, इसका मांस अच्छा माना जाता है।

लैन्डरेस :

यह अमेरिकी नश्ल का सुअर है यह उजले रंग का तेजी से बढ़ने वाला उन्नत कोटि का नश्ल है, इसका शरीर चिकना तथा लम्बा होता है, इनके कान लम्बे तथा आगे की ओर आँख के उपर कुछ झुके रहते हैं। इनके मांस में चर्बी अपेक्षाकृत कम पाये जाते हैं। यह नश्ल मांस उत्पादन के लिए अच्छा माना जाता है।

हेम्पशायर :

यह अमेरिकी नस्ल का सुअर है। इसका शरीर मध्यम आकार का होता है। इसके शरीर का रंग काला होता है, पर एक उजले रंग की धारी इसके अगले पैर पीठ पर घेरती हुई पायी जाती है। इसका शरीर लम्बा तथा हैम अच्छी तरह विकसित रहता है। इसका मांस अपेक्षाकृत अच्छे किस्म का होता है।

टेमवर्थ :

इंगलैंड में पाये जाने वाला सुअर का नश्ल है इसके शरीर का रंग लाल होता है, शरीर लम्बा तथा चौड़ाई कम रहती है, कान सीधे रहते हैं इसका मांस चर्बीदार होता है।

संकर सुअर का उत्पादन :

देशी सुअर एवं विदेशी सुअर के प्रजन्न से उत्पन्न सूअर को संकर सुअर कहते है। राँची पशु चिकित्सा महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा टेमवर्थ और देशी सुअर से प्रजनित कर एक अच्छा नश्ल विकसित किया गया है जिसे टी० एण्ड डी० के नाम से जाना जाता है। इसके शरीर का रंगा काला होता है। मांस उत्पादन की दृष्टि से यह सर्वाधिक फायदेमंद

सुअरों की प्रमुख बीमारियाँ:

1. स्वाइन फीवर :

यह एक सक्रामक रोग है जो सूक्षम जीवाणु (वाइरस) से होता है जब यह तीव स्थिति में होता है तो सूअर मुश्किल से जीवित रह पाता है।

लक्षण : तीव्र बुखार होना, अरूची, दस्ता, शरीर पर लाल पीला धब्बे निकल आना, चलने में डगमगाहट इत्यादि इस रोग के मुख्य लक्षण है।

रोकथाम : इस रोग के रोकथाम हेतु बीमार सूअर को झुण्ड से अलग कर देना चाहिए। जो सूअर स्वस्थ्य है उन्हें खुली धूप में खुला छोड़ देना चाहिए। इसके रहने के स्थान पर रोगनाश्क दवा डिसइनफेक्टेंट का छिड़काव करना चाहिए।

टीकाकरण :

1. प्रत्येक सूअर को एक मिली लीटर स्वाइन फीवर का टीका लगाया जाता है।
2. टीका का रोग अवरोधक क्षमता 1 वर्ष है। अतः प्रत्येक वर्ष टीका लगवाना चाहिए।

खुरहा–मुँहपका :

यह जल्द फैलने वाला सक्रात्मक रोग है। यह रोग हर उम्र के सुअरों में पाया है।

लक्षण : तेज बुखार होना, मुँह एंव पैर में छोटे–छोटे धाव हो जाते है। सूअर लंगड़ा कर चलते है। पशु सुस्त हो जाता है। तथा भुख मर जाती है।

रोकथाम :

1. रोगग्रस्त सूअरों को झुण्ड से अलग कर देना चाहिए।
2. सुअरों को साफ और सुखी जगह पर रखना चाहिए तथा हल्का फुलका खाना देना चाहिए।
3. पशु चिकित्सक से सलाह लेकर दवा देना चाहिए।

प्रजनन व्यवस्था :

70 प्रतिशत सूकरियाँ प्रायः रात में ही बच्चा देती है। अक्सर रात में बच्चा देते समय सूकरियों को अपना झाल खाने की सम्भावना बढ़ जाती है।

नवजात बच्चे की मृत्यु दर काफी बढ़ जाती है। अतः सूकरियों से दिन में बच्चे लेने के लिए उसे अनुमानित बच्चा देने के दो दिन पहले मांस में एक मि.ली. पी.जी.एफ.– 2 अल्फ की सूई देनी चाहिए। ऐसा देखा गया कि सूई देने के बाद करीब 80 प्रतिशत सूकरियाँ 20 या 30 घंटे के अंदर में दूसरे दिन, दिन में बच्चे देती है।

इससे सुअर पालकों को निम्न फायदे होते है :

1. दिन में बच्चे देने से उसकी देखभाल अच्छी तरह करने से झाल खाने की संभावना बिल्कुल समाप्त हो जाती है।
2. पी.जी.एफ.– 2 अल्फा की सूई लगाने से सूकरियों को दूध प्रवाह बढ़ जाता है, जिसके चलते उसके छौने स्वस्थ्य रहते हैं। फलस्वरूप छौनों की बढ़ोतरी अधिक एवं मृत्यु दर कम हो जाती है।
3. सूकरियाँ जल्द पाल खा जाती है, जिसके चलते एक सूकरी से दो बार बच्चा आसानी से लिया जा सकता है, लेकिन यदि सूकरी के बच्चे देने की अनुमानित तिथि को मालूम नहीं हो तो इस सूई को नहीं देनी चाहिये अन्यथा सूकरी को गर्भपात हो जायेगा और फायदे के बदले नुकसान हो जायेगा। ऐसी हालत में सूकरी को बच्चा देने के 12 घंटे के अन्दर इस सूई को मांस में देनी चाहिए। ताकि सूकरी को दूध प्रवाह ज्यादा होने से बच्चे की बढ़ोतरी अधिक तथा मृत्यु दर कम की जा सके।

सूकर प्रजनन से संबंधित ध्यान देने योग्य बातें :–

1. सर्वप्रथम पाल खिलाने की उम्र – 8 से 9 माह
2. ऋंतु चक्र – 18 से 24 दिन
3. गर्म रहने का समय – 2 से 3 दिन
4. पाल खिलाने का समय – गर्म शुरू होने से 12 से 30 घंटे के बीच
5. गाभिन रहने का समय – 112 से 116 दिन
6. औसत कुल प्रजनन उम्र – 6 से 8 वर्ष

7. बच्चे अलग करने के बाद
   सूकरियों को गर्म होने के समय — 5 से 15 दिन
8. दो वियानो के बीच का अन्तराल — 6 से 7 माह
9. बच्चे देने की क्षमता — 8 से 15 बच्चे

सूअर पालन व्यवसाय को लाभदायक बनाने के उपाय :

1. स्वाइन फीवर एवं खुरहा–मुँहपका का टीका वर्ष से एक बार अवश्य लगा लें।
2. अपने पशुओं का निरीक्षण 24 घंटे में कम से कम एक बार अवश्य कर लें।
3. बच्चा देने वाली सुअरी को बच्चा देने के करीब एक महीना पहले जोंक की दवा देनी चाहिए।
4. 6–8 सप्ताह के नर बच्चें का जिन्हें प्रजनन के लिए नहीं रखना है बधिया कर देनी चाहिए।
5. मादा सूअर करीब 9 महींने से 1 वर्ष की उम्र में पाल खाने योग्य हो जाती है और 13 महींने से 15 महींने की उम्र में बच्चा देती है। एक बार में मादा सूअर 14–16 बच्चे दे सकती है।
7. बच्चे पैदा होने के तुरंत बाद ही मां का स्तन ढुढ़ने लगती है और इसे पीना शुरू करती है। ये बच्चे प्रथम दिन जिस स्तन को दुध पीने लिए पकड़ते हैं इसी स्तन को बराबर पीते है।
8. प्रसव गृह में हमेशा स्वच्छ पानी रहना नितांत आवश्यक है। चूँकि सुअरियों को अधिक दूध का प्रवाह करना पड़ता है। अतः प्रत्येक बार इसे पिलाने के पश्चात् उसे प्यास लगती है और पानी पीना चाहती है।